सुसमाचार

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय
चार

लूका रचित सुसमाचार

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 4

नोट्स 5

I. परिचय (0:20) 5

II. पृष्ठभूमि (1:44) 5

A. लेखक (1:58) 5

1. पारम्परिक विचार (4:18) 6

2. व्यक्तिगत इतिहास (11:23) 7

B. मूल पाठक (18:03) 8

1. थियुफिलुस (18:22) 8

2. विशाल पाठक (22:02) 8

C. अवसर (24:41) 8

1. तिथि (24:56) 8

2. उद्देश्य (26:33) 9

III. संरचना एवं विषय-सूची (28:20) 9

A. प्रस्तावना : लूका 1:1-4 (29:00) 9

B. यीशु की शुरूआतें (30:19) 9

1. जन्म की घोषणाएँ (31:37) 9

2. जन्म और बचपन (34:16) 10

3. यूहन्ना द्वारा यीशु की पहचान (39:32) 10

4. परमेश्वर के पुत्र के रूप में पुष्टियाँ (43:03) 10

C. गलील में यीशु की सेवकाई (48:56) 11

1. नासरत में प्रचार (49:50) 11

2. उपदेश और चमत्कार (59:32) 11

3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (57:57) 11

4. उपदेश और चमत्कार (59:32) 12

5. बारह प्रेरितों की तैयारी (1:00:41) 12

D. यीशु की यरूशलेम यात्रा (1:02:28) 13

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

1. शिष्यता की प्रकृति (1:04:00) 13
2. बढ़ता हुआ संघर्ष (1:10:57)....13
3. शिष्यता का मूल्य (1:14:23)....14
4. यीशु का समर्पण (1:16:24) 15
E. यरूशलेम और उसके आस-पास यीशु की सेवकाई (1:18:15) 15
F. यीशु की क्रूस की मृत्यु और पुनरूत्थान (1:23:42) 16
1. गिरफ्तारी, मुकद्दमा, और मृत्यु (1:24:30)....16
2. पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण (1:32:06)....17
IV. मुख्य विषय (1:34:45)....17
A. उद्धार का वर्णन (1:36:30) 17
B. उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर (1:44:25) 18
1. परमेश्वर की सामर्थ (1:44:41)....18
2. परमेश्वर की योजना (1:47:07)....18
3. परमेश्वर का पुत्र (1:49:16) 19
C. उद्धार पाने वाले लोग (1:51:23)....19
V. उपसंहार (2:04:41) 20
पुनर्समीक्षा के प्रश्न 21
उपयोग के प्रश्न 27

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग के प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:20)

लूका का सुसमाचार हमें याद दिलाता है कि अपने स्वयं के जीवन की कीमत पर यीशु हमें बचाने के लिए आया।

II. पृष्ठभूमि (1:44)

A. लेखक (1:58)

दो संस्करणों वाली रचना :

- पहला संस्करण : लूका रचित सुसमाचार
- दूसरा संस्करण : प्रेरितों के काम

दोनों पुस्तकों के लेखक ने थियुफिलुस नामक किसी व्यक्ति को लिखा है।

प्रमाण कि एक ही व्यक्ति ने इन दोनों पुस्तकों को लिखा है :

- यूनानी भाषा की शैली समान है

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- समान विषयों पर बल :
    - सुसमाचार की सार्वभौमिक प्रस्तुति
    - पवित्र आत्मा का कार्य
    - परमेश्वर के वचन और उसकी इच्छा की प्रबल सामर्थ
    - "उद्धार" के रूप में मसीह के कार्य का बारम्बार वर्णन

1. पारम्परिक विचार (4:18)

अज्ञात लेखक : थियुफिलुस इसे लिखने वाले को जानता था।

तीन प्रकार के प्रमाण पुष्टि करते हैं कि लूका इसका लेखक है :

- नया नियम
  लूका पौलुस की सेवकाई के अंतिम वर्षों में उसके साथ था : 2 तीमुथियुस 4:11
- आरम्भिक हस्तलेख
    - चर्मपत्र संख्या 75
    - अन्य बहुत-से प्राचीन हस्तलेख
    - कोई भी प्राचीन हस्तलेख इसका श्रेय किसी अन्य व्यक्ति को नहीं देता।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- आरम्भिक कलीसिया
    - मुराटोरियन चर्मपत्र
    - मार्शियन-विरोधी प्रस्तावना
    - दूसरी और तीसरी सदियों के बहुत से कलीसियाई अगुवे :
        - आइरेनियस (सन् 130-202)
        - सिकन्दरिया के क्लेमेन्ट (सन् 150-215)
        - तर्तुलियन (सन् 155-230)

2. व्यक्तिगत इतिहास (11:23)

- एक प्रेरित नहीं था
- गैरयहूदियों से मसीहियत में आया था
- सुशिक्षित
- सेवकाई में पौलुस का सहभागी

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. मूल पाठक (18:03)

1. थियुफिलुस (18:22)

लूका की प्रस्तावना यह संकेत देती है कि थियुफिलुस उसका संरक्षक था, उसी ने उसे पुस्तक लिखने के लिए अधिकृत किया था और उसकी आर्थिक सहायता की थी।

थियुफिलुस लूका का शिष्य भी था।

2. विशाल पाठक (22:02)

आरम्भिक मसीहियों में अपनी पुस्तकों को आपस में बाँटने की प्रवृत्ति थी।

उच्च साहित्यिक शैली

C. अवसर (24:41)

1. तिथि (24:56)

कम से कम दो बातें सन् 65 और 67 के बीच की तिथि की ओर संकेत करती हैं।:

- लूका के सुसमाचार और मरकुस के सुसमाचार के बीच तुलना

- प्रेरितों के काम की पुस्तक

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. उद्देश्य (26:33)

लूका ने थियुफिलुस और उसके समान गैरयहूदी मसीहियों को यहूदी मसीहा यीशु पर उनके नए विश्वास में दृढ़ बनाने के लिए लिखा था।

III. संरचना एवं विषय-सूची (28:20)

A. प्रस्तावना : लूका 1:1-4 (29:00)

B. यीशु की शुरूआतें (30:19)

लूका का मुख्य उद्देश्य यह दिखाना था कि :

- यीशु परमेश्वर का पुत्र और दाऊद का पुत्र भी है
- वह पूर्णतः दैवीय और पूर्णतः मानवीय है
- यीशु मसीहा या मसीह भी था

1. जन्म की घोषणाएँ (31:37)

- यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के जन्म की घोषणा : 1:5-25
- यीशु के जन्म की घोषणा : 1:26-38
- मरियम के समक्ष इलीशिबा की घोषणा : 1:39-56

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. जन्म और बचपन (34:16)

- यूहन्ना का जन्म और बचपन: 1:57-80

- यीशु का जन्म और बचपन : 2:1-52

निर्धनता में जन्म के बावजूद मरियम का पुत्र वास्तव में परमेश्वर का चुना हुआ मसीहा और राजा था।

3. यूहन्ना द्वारा यीशु की पहचान (39:32)

4. परमेश्वर के पुत्र के रूप में पुष्टियाँ (43:03)

- दैवीय पुष्टि : 3:21-22

- वंशावली के द्वारा पुष्टि : 3:23-38

- स्वयं यीशु द्वारा पुष्टि : 4:1-13

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

C. गलील में यीशु की सेवकाई (48:56)

1. नासरत में प्रचार (49:50)

2. उपदेश और चमत्कार (59:32)

- दुष्टात्मा : 4:31-36
- बहुत से लोगों को चंगा किया : 4:38-42
- तीन चेलों का बुलाया जाना : 5:1-11
- कोढ़ी की चंगाई : 5:12-15
- लकवाग्रस्त की चंगाई : 5:17-26
- मत्ती को बुलाया जाना : 5:27-32
- उपवास पर शिक्षा : 5:33-39
- सब्त पर शिक्षा : 6:1-11
- चेलों को बुलाना : 6:12-16
- मैदानी उपदेश : 6:17-49
- एक सूबेदार के दास को चंगा करना : 7:1-10
- एक विधवा के पुत्र को जिलाना : 7:11-16

3. यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला (57:57)

यीशु के चमत्कारों और प्रचार ने स्पष्टतः यशायाह की भविष्यद्वाणियों को पूरा किया

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. उपदेश और चमत्कार (59:32)

- बीज बोने वाले का दृष्टान्त : 8:1-15
- दीवट का दृष्टान्त : 8:16-18
- यीशु का सच्चा परिवार : 8:19-21
- कई चमत्कार : 8:22-56

5. बारह प्रेरितों की तैयारी (1:00:41)

- प्रेरितों को भेजना : 9:1-9
- 5,000 लोगों को भोजन खिलाना : 9:10-17
- प्रेरितों का अंगीकार : 9:18-27
- यीशु का रूपान्तरण : 9:28-36
- यीशु द्वारा को निकालना : 9:37-45
- राज्य में महानता : 9:46-50

यीशु ने अपने चेलों को तैयार किया :

- उसके अधिकार को पहचानने के लिए
- उसकी सामर्थ पर भरोसा रखने के लिए
- नम्र दासों के रूप में सेवा करने के लिए

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

D. यीशु की यरूशलेम यात्रा (1:02:28)

यीशु अपने लोगों को उद्धार देने की परमेश्वर की योजना के प्रति समर्पित था यद्यपि इसके लिए यरूशलेम में उसका मरना आवश्यक था।

1. शिष्यता की प्रकृति (1:04:00)

- सुसमाचार प्रचार, कठिनाइयाँ, सामर्थ : 9:51-10:24
- शिष्यता से संबंधित तीन बिंदु : 10:25-11:13
    - पड़ोसी के प्रति प्रेम : अच्छा सामरी, 10:29-37
    - परमेश्वर के प्रति प्रेम : मरियम से भेंट, 10:38-42
    - प्रार्थना : प्रार्थना पर उपदेश, 11:1-13

2. बढ़ता हुआ संघर्ष (1:10:57)

यीशु ने जान-बूझकर यहूदी अगुवों से शत्रुता ली ताकि :

- वह उनके द्वारा परमेश्वर के लोगों के खराब नेतृत्व पर उन्हें डाँटे
- वह लोगों को अपने स्वयं के राज्य में बुलाए
- वे उसे यरूशलेम में क्रूस पर चढ़ाएँ

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उदाहरण के लिए :

- आरोप और प्रत्युत्तर : 11:14-28
- पाखण्डी न बनने की चेतावनी : 12:1-3
- आराधनालयों के विरुद्ध चेतावनी : 12:4-21
- कंगालों को आश्वासन : 12:22-32
- भविष्य का संघर्ष : 12:33-59
- सब को अपने पापों से मन फिराने के लिए बुलाहट : 13:1-9
- सब्त के दिन एक विवादास्पद चंगाई : 13:10-17
- राज्य में अनपेक्षित प्रवेश : 13:18-30
- हेरोदेस के साथ तनाव बढ़ना : 13:31-35
- सब्त के दिन एक विवादास्पद चंगाई : 14:1-24
- भविष्य का संघर्ष : 14:25-34
- पाखंडता के विरुद्ध चेतावनी : 15:1-32
    - परिचय : 15:1-2
    - खोई हुई भेड़ : 15:3-7
    - खोया हुआ सिक्का : 15:8-11
    - खोया हुआ पुत्र : 15:12-32

3. शिष्यता का मूल्य (1:14:23)

- भंडारीपण पर शिक्षा : 16:1-17:10

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- अन्तिम न्याय पर शिक्षा : 17:11-18:8

- नम्ता पर शिक्षा : 18:9-30

4. यीशु का समर्पण (1:16:24)

- मृत्यु की भविष्यद्वाणी : 18:31-34

- अंधे व्यक्ति की आशीष : 18:35-43

- जक्कई की आशीष : 19:1-10

- राजा के सेवकों का दृष्टान्त : 19:11-27

E. यरूशलेम और उसके आस-पास यीशु की सेवकाई (1:18:15)

- यीशु के यरूशलेम में प्रवेश : 19:28-44

- यीशु द्वारा मन्दिर को शुद्ध करना : 19:45, 46

- यीशु का मन्दिर में उपदेश देना : 19:47-21:38

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

F. यीशु की क्रूस की मृत्यु और पुनरूत्थान (1:23:42)

1. गिरफ्तारी, मुकद्दमा, और मृत्यु (1:24:30)

- पकड़वाने का षड़यंत्र : 22:1-6
- अन्तिम भोज : 22:7-38
- यीशु की प्रार्थना : 22:39-46
- यीशु की गिरफ्तारी : 22:47-53
- पतरस का इनकार : 22:54-62
- यीशु का मुकद्दमा : 22:63-23:25
- यीशु को क्रूस पर चढ़ाना : 23:26-49
    - असहाय लोगों पर तरस खाया
    - अपने पिता पर भरोसा रखा
- यीशु का दफनाया जाना : 23:50-56

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. पुनरूत्थान और स्वर्गारोहण (1:32:06)

- यीशु की खाली कब्र : 24:1-12

- यीशु मार्ग पर : 24:13-35

- यीशु अपने चेलों के साथ: 24:36-49

- यीशु का स्वर्गारोहण: 24:50-53

IV. मुख्य विषय (1:34:45)

उद्धार : बुराई की तानाशाही और पाप के विरूद्ध परमेश्वर के दण्ड से छुटकारा।

A. उद्धार का वर्णन (1:36:30)

व्यक्तिगत उद्धार मुख्यतः लोगों की दशाओं को पलटने से संबंधित है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उद्धार का स्वरूप : बुरी दशाओं से अच्छी दशाओं की ओर एक परिवर्तन।

उद्धार के बड़े परिवर्तन हमें अन्दर से भी बदलते हैं।

उद्धार का उचित प्रत्युत्तर आनन्द है :

- जकर्याह का गीत : लूका 1:68-79
- मरियम का गीत : लूका 1:46-55
- शिमौन का गीत : लूका 2:29-32
- स्वर्गदूतों की घोषणाएं : लूका 1:14, 2:10-11
- खोई हुई भेड़, खोए हुए सिक्के, और खोए हुए पुत्र के दृष्टान्त : लूका 15

B. उद्धारकर्ता के रूप में परमेश्वर (1:44:25)

1. परमेश्वर की सामर्थ (1:44:41)

लूका अपने पाठकों को यह समझाना चाहता था कि सब कुछ परमेश्वर के नियंत्रण में है।

2. परमेश्वर की योजना (1:47:07)

लूका ने सिखाया कि उद्धार परमेश्वर की योजना है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. परमेश्वर का पुत्र (1:49:16)

लूका का सुसमाचार बार-बार यह पुष्टि करता है कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है।

C. उद्धार पाने वाले लोग (1:51:23)

1. गैरयहूदी (1:54:00)

पुराना नियम गैरयहूदियों को परमेश्वर के राज्य में लाए जाने के बारे में बताता है।.

लूका द्वारा इसे लिखने का एक कारण गैरयहूदियों को मसीह में उनके उद्धार का भरोसा दिलाना था।

2. पापी (1:56:59)

ऐसे लोग जिन्हें उनके पापों के कारण यहूदी समाज ने अलग-थलग कर दिया था।

3. स्त्रियाँ (1:58:30)

महिलाओं को समाज में अधिक अधिकार नहीं थे और उन्हें अधिक महत्व नहीं दिया जाता था।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

4. कंगाल (2:00:32)

यीशु ने कंगालों को उद्धार का सुसमाचार सुनाया।

गैरयहूदियों, पापियों और स्त्रियों के समान कंगालों के पास भी बहुत कम अधिकार थे और परमेश्वर के राज्य को प्राप्त करने की अपेक्षा उनसे नहीं की जाती थी।

V. उपसंहार (2:04:41)

लूका का सुसमाचार यीशु को परमेश्वर के तेजोमय पुत्र के रूप में प्रकट करता है जो संसार के प्रेमी उद्धारकर्ता के रूप में पृथ्वी पर आया। वह जाति, धन या प्रतिष्ठा पर ध्यान दिए बिना प्रत्येक व्यक्ति को परमेश्वर के उद्धार का सुसमाचार देता है।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. हम कैसे जानते हैं कि लूका का सुसमाचार लूका ने ही लिखा है और उसका विवरण सही है?

2. हम कैसे जानते हैं कि लूका का सुसमाचार थियुफिलुस और गैरयहूदी मसीहियों के लिए लिखा गया था?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. थियुफिलुस जैसे गैरयहूदी मसीहियों के लिए सुसमाचार लिखने के पीछे लूका का क्या उद्देश्य था?

4. यीशु किस प्रकार पूर्ण रूप से ईश्वरीय और पूर्ण रूप से मानवीय था?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. गलील में अपनी सेवकाई के दौरान यीशु ने किस प्रकार प्रमाणित किया कि वह वही उद्धारकर्त्ता है जिसकी प्रतिज्ञा पुराने नियम में की गई थी?

6. यीशु ने किस प्रकार यरूशलेम की अपनी यात्रा में लोगों को उद्धार देने की परमेश्वर की योजना में अपने समर्पण को दर्शाया?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. यरूशलेम में और उसके आसपास यीशु की सेवकाई में लूका यीशु के कौनसे अधिकारपूर्ण कार्यों का वर्णन करता है?

8. यीशु ने अपने लोगों के लिए किस प्रकार उद्धार के कार्य को पूरा किया?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

9. लूका ने किस प्रकार उद्धार और उद्धार की आवश्यकता रखने वाले लोगों का वर्णन किया?

10. अपने लोगों के उद्धारकर्त्ता के रूप में, परमेश्वर उनके लिए उद्धार कैसे लेकर आया?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

11. उन भिन्न प्रकार के लोगों के बारे में बताइए जिनको यीशु उद्धार देने के लिए आया।

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. लूका के सुसमाचार का उद्देश्य हमारे विश्वास को कैसे दृढ कर सकता है?

2. जब हम लूका का सुसमाचार पढ़ते हैं तो उसके मूल पाठकों को ध्यान में रखना क्यों महत्वपूर्ण है?

3. हमारे लिए प्रार्थना करना क्यों महत्वपूर्ण है?

4. बाइबल में से उदाहरण लेना कैसे हमें परीक्षा का सामना करने में सहायता कर सकता है?

5. ऐसे कौनसे विशेष तरीके हैं जिनमें आप मैदानी संदेश को अपने जीवन में लागू कर सकते हैं?

6. लूका के सुसमाचार में हम मंदिर को शुद्ध करने की घटना से क्या सीख सकते हैं?

7. परमेश्वर के राज्य की वास्तविकता के प्रति हमें कैसा प्रत्युत्तर देना चाहिए?

8. मसीही जीवन में आनंद क्यों महत्वपूर्ण है?

9. यीशु के चेलों के रूप में हमें हमारे पड़ोसी और परमेश्वर दोनों से प्रेम करना क्यों महत्वपूर्ण है?

10. यह जानना क्यों महत्वपूर्ण है कि यीशु अपने लोगों को पाप के दोष से बचाने के लिए आया?

11. इस जीवन और संसार में हम अपनी कितनी परिस्थितियों के बदले जाने की अपेक्षा रखते हैं?

12. यह बात जानकार हमें क्या प्रोत्साहन मिलता है कि यीशु परमेश्वर के राज्य को पृथ्वी पर लाया है?

13. पापियों और कंगालों जैसे सामाजिक रूप से अलग-थलग किए गए समूहों पर लूका द्वारा दिए गए बल के प्रति हमें कैसा प्रत्युत्तर देना चाहिए?

14. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है?

© 2012 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org